नवभारत
संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

बढ़ते सड़क हादसे ; ठोस उपाय जरूरी

देश में सड़कें चौड़ी हो रही हैं, एक्सप्रेस वे आधुनिक बन रहे हैं और इंफ्रास्ट्रक्चर को विकास का प्रतीक बताया जा रहा है. लेकिन इसी चमकदार तस्वीर के पीछे एक भयावह सच्चाई छिपी है. संसद में केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी द्वारा पेश किए गए यह आंकड़े झकझोर देने वाले हैं कि पिछले एक वर्ष में करीब 5 लाख सड़क दुर्घटनाएं और 1.8 लाख मौतें हुई. यह केवल प्रशासनिक असफलता का प्रश्न नहीं, बल्कि एक गहरे सामाजिक संकट का संकेत है. सवाल सीधा है कि क्या सड़क सुरक्षा केवल सरकार की जिम्मेदारी है, या समाज भी उतना ही दोषी है ?

सरकार ने सड़क सुरक्षा को लेकर '4-ई 'मॉडल,इंजीनियरिंग, एनफोर्समेंट, एजुकेशन और इमरजेंसी केयर,को अपनाया है. देश भर में 8,500 से अधिक ब्लैक स्पॉट्स की पहचान कर उन्हें सुधारने का काम चल रहा है. दुर्घटना के बाद घायलों को तुरंत इलाज मिले, इसके लिए रुपए 1.5 लाख तक के कैशलेस उपचार की पायलट योजना शुरू की गई है. 'गुड सेमेरिटन' कानून के तहत मदद करने वाले नागरिक को प्रोत्साहन भी दिया जा रहा है. तकनीक का सहारा लेते हुए हाईवे पर एआई आधारित कैमरे, स्पीड डिटेक्शन सिस्टम और वाहनों के लिए सख्त सुरक्षा मानक,जैसे 6 एयरबैग और भारत एनसीएपी रेटिंग,लागू की जा रही हैं. जाहिर है सरकार की नीयत में कमी नहीं दिखती, लेकिन कहना पड़ेगा कि परिणाम अब भी संतोषजनक नहीं हैं. खुद परिवहन मंत्री ने यह स्वीकार किया है कि कई हादसे दोषपूर्ण रोड इंजीनियरिंग के कारण होते हैं. ऐसे में सवाल उठता है कि क्या सड़क डिजाइन करने वालों और निर्माण कंपनियों की जवाबदेही तय की जा रही है? अगर खराब डिजाइन से जान जाती है, तो केवल मुआवजा काफी नहीं, कड़ी दंडात्मक कार्रवाई भी जरूरी है. ड्राइविंग लाइसेंस प्रक्रिया में पारदर्शिता और कठोरता समय की मांग है. आज भी लाइसेंस 'योग्यता' से ज्यादा 'पहुंच' से मिल जाता है. वहीं, ग्रामीण और जिला सड़कों की उपेक्षा भी दुर्घटनाओं का बड़ा कारण है. हाईवे चमक रहे हैं, लेकिन गांवों की सड़कें आज भी मौत को न्योता दे रही हैं. साथ ही, सार्वजनिक परिवहन को मजबूत किए बिना निजी वाहनों की बाढ़ को रोका नहीं जा सकता. जब तक बस, रेल और मेट्रो सुरक्षित, सस्ती और सुलभ नहीं होंगी, सड़कें दबाव में रहेंगी. कानून और तकनीक तभी सफल होते हैं, जब नागरिक सहयोग करें. हेलमेट और सीट बेल्ट चालान से बचने का औजार नहीं, जीवन रक्षक हैं. तेज रफ्तार को 'स्टेटस सिंबल' समझने की मानसिकता बदलनी होगी. गलत दिशा में गाड़ी चलाना, लेन तोड़ना और शराब पीकर ड्राइविंग करना सिर्फ नियम उल्लंघन नहीं, बल्कि संभावित हत्या है. दुर्घटना के बाद घायल को अस्पताल पहुंचाना मानवता का धर्म है. 'गुड सेमेरिटन' कानून नागरिक को कानूनी सुरक्षा देता है, फिर भी डर के कारण लोग पीछे हट जाते हैं, यह सोच बदलनी होगी.

कुल मिलाकर सड़क पर चलने वाला हर व्यक्ति किसी परिवार की उम्मीद होता है. 1.8 लाख मौतें आंकड़ा नहीं, 1.8 लाख उजड़े घर हैं. सरकार सड़कें और कानून बना सकती है, लेकिन सड़क पर फैसला ड्राइवर करता है. अगर विकास की रफ्तार के साथ जिम्मेदारी नहीं बढ़ी, तो यह प्रगति खोखली साबित होगी. सुरक्षित सड़कें तभी संभव हैं, जब सरकार और समाज,दोनों अपनी भूमिका ईमानदारी से निभाएं.

भारतीय राजनीति के शिखर पुरुष दिग्विजय सिंह

डॉ विक्रम चौधरी

भारतीय राजनीति के फलक पर कुछ ऐसे व्यक्तित्व होते हैं जिनकी पहचान केवल उनके पदों से नहीं, बल्कि उनके द्वारा छोड़े गए गहरे वैचारिक और सामाजिक पदचिह्नों से होती है. दिग्विजय सिंह एक ऐसे ही विलक्षण राजनेता हैं. मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री के रूप में उनके दस वर्षों का कार्यकाल (1993-2003) राज्य के इतिहास में केवल सत्ता के संचालन का समय नहीं था, बल्कि वह एक ऐसी सामाजिक इंजीनियरिंग और प्रशासनिक नवाचार का दौर था, जिसने प्रदेश की राजनीति की दिशा और दशा को स्थायी रूप से प्रभावित किया.

आज जब उनकी उपलब्धियों और उनके जीवन के संघर्षों की चर्चा होती है, तो यह स्पष्ट होता है कि उनकी सबसे बड़ी सफलता मध्य प्रदेश में कांग्रेस को एक अभेद्य सामाजिक आधार प्रदान करना और हाशिए पर खड़े वर्गों को मुख्यधारा की राजनीति का अभिन्न हिस्सा बनाए रखना रही. भारतीय राजनीति में दिग्विजय सिंह एक ऐसे नाम हैं जिन्हें अक्सर उनके बयानों और रणनीतियों के चश्मे से देखा जाता है, लेकिन उनके 1993 से 2003 तक के मुख्यमंत्री काल का एक ऐसा पक्ष है जिसे सामाजिक क्रांति का स्वर्ण युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी. हाल ही में उन्हें मिले सम्मान के अवसर पर यह आवश्यक हो जाता है कि हम उनके उस विजन की चर्चा करें, जिसने मध्य प्रदेश में हाशिए पर खड़े दलित और आदिवासी वर्गों को मुख्यधारा में लाने का साहस किया था. दिग्विजय सिंह के कार्यकाल की सबसे बड़ी उपलब्धि भोपाल डिक्लेरेशन (2002) थी. यह केवल एक सरकारी पत्र नहीं था, बल्कि दलितों और आदिवासियों के आर्थिक सशक्तिकरण का एक ब्लूप्रिंट था.

दिग्विजय सिंह की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता उनका वह विजन था जिसे भोपाल दस्तावेज के रूप में जाना जाता है. 2002 में आया यह दस्तावेज़ भारत में दलित और आदिवासी विमर्श के इतिहास में एक क्रांतिकारी मोड़ था. दिग्विजय सिंह ने यह समझा था कि सामाजिक न्याय केवल प्रतीकात्मक राजनीति या नारों से नहीं आ सकता; इसके लिए आर्थिक संसाधनों पर पिछड़े और वंचित वर्गों का अधिकार सुनिश्चित करना अनिवार्य है. भोपाल घोषणापत्र के माध्यम से उन्होंने देश में पहली बार सप्लायर डायवर्सिटी की अवधारणा को सरकारी नीति का हिस्सा बनाया. इसके तहत सरकारी खरीद और ठेकों में अनुसूचित जाति और जनजाति के लोगों के लिए कोटा निर्धारित किया गया. यह कदम केवल आर्थिक लाभ पहुँचाने के लिए नहीं था, बल्कि इसका उद्देश्य दलित और आदिवासी समाज के भीतर एक उद्यमी वर्ग पैदा करना था. वे चाहते थे कि यह समाज केवल श्रम तक सीमित न रहे, बल्कि पूंजी और व्यापार के क्षेत्र में भी अपनी पहचान बनाए. उनकी प्राथमिकताओं में भूमि सुधार हमेशा शीर्ष पर रहा. दिग्विजय सिंह का मानना था कि ग्रामीण भारत में प्रतिष्ठा और सुरक्षा का सबसे बड़ा मानक भूमि है.

अपने कार्यकाल के दौरान उन्होंने लाखों एकड़ सरकारी और चरनोई भूमि को मुक्त कराकर भूमिहीन दलित और आदिवासी परिवारों को आवंटित किया. यह एक ऐसा साहसिक निर्णय था जिसने ग्रामीण क्षेत्रों के शक्ति समीकरणों को बदल दिया. जब एक भूमिहीन दलित के पास अपनी जमीन का पट्टा आया, तो उसने न केवल आर्थिक स्वावलंबन पाया, बल्कि समाज में उसकी गरिमा भी बढ़ी. उनके इन प्रयासों का एक बहुत बड़ा राजनीतिक परिणाम यह हुआ कि मध्य प्रदेश की धरती पर कभी तीसरा मोर्चा या जातीय पहचान आधारित क्षेत्रीय दल अपनी जड़ें नहीं जमा पाए. उत्तर भारत के अन्य राज्यों में जहाँ दलित और पिछड़े वर्गों का मोहभंग कांग्रेस से हुआ और वे क्षेत्रीय दलों की ओर मुड़ गए, वहीं मध्य प्रदेश में दिग्विजय सिंह की नीतियों के कारण इन वर्गों का विश्वास कांग्रेस में अटूट बना रहा. उन्होंने कांग्रेस को अभिजात्य वर्ग की पार्टी की छवि से निकालकर सर्वहारा और वंचितों की पार्टी के रूप में स्थापित किया. प्रशासनिक स्तर पर दिग्विजय सिंह ने विकेंद्रीकरण को अपना मूल मंत्र बनाया.

उन्होंने यह महसूस किया कि भोपाल के वल्लभ भवन में बैठकर सुदूर बस्तर या झाबुआ के गांवों की समस्याओं का समाधान नहीं किया जा सकता. इसीलिए उन्होंने पंचायती राज संस्थाओं को सशक्त बनाया और जिला सरकार की अवधारणा पेश की. यह उनके शासन का वह दौर था जब सत्ता का केंद्र सचिवालय से निकलकर ग्राम सभाओं तक पहुँचा.

शिक्षा गारंटी योजना इसका सबसे ज्वलंत उदाहरण है. इस योजना के तहत यदि किसी गांव के लोग स्कूल की मांग करते थे, तो सरकार 90 दिनों के भीतर वहां शिक्षक और संसाधन उपलब्ध कराने की गारंटी देती थी. इस नवाचार ने प्रदेश की साक्षरता दर में जो उछाल लाया, उसकी सराहना संयुक्त राष्ट्र और कॉमनवेल्थ जैसी अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने भी की.

महाकौशल की डायरी

अपने ही मंत्रियों के खिलाफ विधायक ने की आवाज बुलंद...!

अविनाश दीक्षित

दमोह जिले में भारतीय जनता पार्टी में अपने ही नेताओं के बीच मतभेद का ऐसा नजारा सार्वजनिक हुआ जिसने पार्टी के अनुशासन पर दाग लगाने की कोशिश की. मामला दमोह जिला भाजपा कार्यालय में आयोजित बैठक से जुड़ा है जिसमें भाजपा विधायक उमादेवी खटीक ने अपनी ही सरकार के दो मंत्रियों पर विधानसभा क्षेत्र में दखल देने के आरोप लगा दिए. मामला गरमाया तो तत्काल प्रभारी मंत्री इंदर सिंह परमार ने माहौल शांत कराया और कहा कि हमारा बड़ा परिवार है, बात आपस में सुलझा ली जाएगी. ऐसी घटनाएं दोबारा नहीं हो. हैरानी की बात तो ये थी कि इस बैठक में प्रभारी मंत्री स्वयं मौजूद थे और उन्होंनें जब ये बयान सुना तो वे भी एकदम से सकते में आ गए. जिसके बाद दमोह जिले के राजनैतिक गलियारों में मामला चर्चाओं का विषय बन गया. पार्टी कार्यकर्ताओं के बीच चर्चा है कि मामला सिर्फ असंतोष का नहीं, बल्कि जिले की राजनीति में बढ़ते शक्ति संतुलन की लड़ाई का संकेत भी है. हालांकि संगठन ने इसे आंतरिक विवाद का नाम दिया है.

खबर है कि विधायक उमादेवी खटीक ने बैठक में स्पष्ट कहा कि अगर दमोह प्रभारी मंत्री हटा में दो मंत्रियों का हस्तक्षेप नहीं रोक पाते हैं तो वे वहां कार्यालय खोल लें और मैं अपने पद से इस्तीफा दे दूंगीं. हालांकि विधायक ने दो मंत्रियों के नाम नहीं लिए लेकिन उनका इशारा काफी कुछ बयां करते नजर आया. दूसरी तरफ संस्कृति पर्यटन एवं धर्मस्व राज्यमंत्री धर्मेंद्र सिंह लोधी ने पत्रकारों के सामने पक्ष रखते हुए कहा कि मैंने कहीं दखल नहीं दिया है. बहरहाल सतही तौर पर मामला ठंडा पड़ता दिख रहा है मगर दमोह के राजनीतिक गालियारों में सियासी अतिक्रमण को लेकर चटखारे लेकर चर्चाएं चल रही हैं.

चूहों के उत्पात से खुली कलई

बच्चों व मरीजों के स्वास्थ्य के प्रति जबलपुर का जिला अस्पताल विक्टोरिया कितना गंभीर है इसकी बानगी चूहों के आतंक ने सभी के सामने लाकर रख दी. संभाग के सबसे बड़े नेताजी सुभाषचंद्र बोस मेडिकल कॉलेज अस्पताल के बाद अब जिला अस्पताल विक्टोरिया के हड्डी वार्ड में चूहों के आतंक की जो तस्वीरें सामने आई उसने अस्पताल प्रबंधन के सुरक्षा व स्वच्छता व्यवस्था के तमाम दावों की पोल खोलकर रख दी. हैरानी तो उस वक्त हुई जब सिविल सर्जन डॉ. नवीन कोठारी ने बयान जारी किया कि विक्टोरिया के बाजू में निर्माणाधीन नई बिल्डिंग कार्य के दौरान चूहे बाहर निकले और हड्डी वार्ड में प्रवेश कर गए. यद्यपि जानकारी के मुताबिक अस्पताल में कीटनाशक दवाईयों के छिड़काव और चूहों के लिए पेस्ट कंट्रोल करने की जिम्मेदारी तय करने विगत 8 दिसंबर को जिम्मेदारों की एक बैठक हुई थी जिस दौरान कागजों में सभी ने अनेक कार्य पूर्ण किए जाने में सहमति जताई, किन्तु चर्चा है कि हकीकत में पेस्ट कंट्रोल जैसा कुछ भी नहीं हुआ जिसका नतीजा था कि विक्टोरिया अस्पताल के हड्डी वार्ड में चूहों का खिरका देखा गया. उधर सीएमएचओ ने तो पूरे मामले में ऐसी चुप्पी साधी जिसकी चर्चाएं अब भी पूरे शहर में हो रहीं हैं कि साहब अब तो अपना मुंह खोल दीजिये.

एक ऐसी आंगनबाड़ी जहां बच्चों के साथ बकरियां करतीं हैं भोजन...

कटनी जिले अंतर्गत ढीमरखेड़ा तहसील के ग्राम कोठी के सेहरा टोला स्थित आंगनबाड़ी केंद्र में लापरवाही का वो नजारा सामने आया जिसने सभी को चौंका दिया. हुआ भी कुछ ये कि इस आंगनबाड़ी केंद्र में दोपहर के वक्त बच्चों को भोजन कराया जा रहा था और उन्हीं बच्चों के बिल्कुल पास बकरियां भी भोजन कर रहीं थीं. हैरानी की बात ये भी कि इस दौरान आंगनबाड़ी केंद्र में न तो आंगनबाड़ी कार्यकर्ता मौजूद थीं और न ही सहायिका, दोनों मौकेसे गायब दिखीं. ममला संज्ञान में आने के बाद रस्मअदायगी के तौर पर परियोजना अधिकारी ने सेक्टर सुपरवाइजर को नोटिस जारी कर दिया, लेकिन ग्रामीणों का आक्रोश कहां थमने वाला था. उन्होनें वायरल वीडियो के बाद मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव और कलेक्टर से मामले में तत्काल हस्तक्षेप कर कार्रवाई की मांग कर डाली है. यह देखना दिलचस्प रहेगा कि मामले को जिला प्रशासन किस चश्मे से देखता है.

चुनाव में किससे मैत्री, किससे मुकाबला

महाराष्ट्र की सभी 29 महानगरपालिकाओं के चुनाव के लिए पार्टियों की मोर्चेबंदी शुरू हो गई है. खास तौर से मुंबई महापालिका पर कब्जे के लिए जबरदस्त होड़ रहेगी, क्योंकि इसका वार्षिक बजट देश के कुछ राज्यों के बजट से भी ज्यादा है. शिवसेना की फूट के बाद बीजेपी और शिवसेना (यूबीटी) में कटुता बढ़ गई. ऐसी स्थिति में मुंबई मनपा चुनाव की वजह से ठाकरे बंधु उद्धव व राज निकट आए हैं, लेकिन महाआघाड़ी का घटक होने पर भी कांग्रेस उन्हें सहयोग करने को तैयार नहीं है. क्योंकि राज ठाकरे की छवि हिंदी व हिंदी भाषियों के विरोध की है. उनसे सहयोग करने का मतलब उत्तरी राज्यों में खुद को नुकसान पहुंचाना होगा. ठाकरे घराने का एकाधिकार तोड़ने के लिए एकनाथ शिंदे, नारायण राणे तथा पुरानी शिवसेना से अलग हुए नेताओं तथा बीजेपी ने कमर कस ली है. ठाकरे बंधुओं का दावा है कि वह मराठी जनता के हित में एकसाथ आए हैं परंतु मुंबई में सिर्फ मराठी वोटों के भरोसे जीतना संभव नहीं है. अन्य भाषा वाले मतदाताओं को वह अपने साथ कैसे लाएंगे? मुंबई, नागपुर, छत्रपति संभाजीनगर व सोलापुर में कांग्रेस तथा पुणे व अन्य स्थानों पर एनसीपी मजबूत है. इन चुनावों की लंबे समय से प्रतीक्षा थी. कुछ शहरों में तो 5 वर्ष से चुनाव टलता आ रहा है. अन्य स्थानों पर 3-4 वर्षों से प्रशासक राज चल रहा है. चुनाव के बाद नगरसेवक सदन में दिखाई देंगे और स्थायी समिति अध्यक्ष पद के लिए होड़ होगी. महापालिका क्षेत्र में कचरा व्यवस्थापन, हवा-पानी का प्रदूषण, ट्रैफिक अव्यवस्था, सड़कों के गड्ढे मुख्य समस्याएं हैं. मुंबई व पुणे में तो यह समस्या कुछ ज्यादा ही है. पुणे और ठाणे में महायुति के घटक दलों के बीच मैत्रिपूर्ण मुकाबला होगा जबकि नागपुर में बीजेपी अपने बल पर लगातार चौथी बार मनपा चुनाव जीतने का प्रयास करेगी. मुंबई को छोड़ दिया जाए, तो प्रमुख महापालिकाओं में महायुति के लिए विपक्ष की ओर से कोई बड़ी चुनौती नहीं है.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

गांधी-बापू से नहीं कोई काम मनरेगा अब राम के नाम

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, मन की बात बोलने वाले मोदी को मनरेगा पसंद नहीं आई. उनकी सरकार ने विचार किया कि बेचारे गांव के किसान-मजदूर कब तक मनरेगा की पुरानी राग-रागिनी सुनते रहेंगे, इसलिए ट्यून बदली जाए. इसलिए पहले तो इसे पीबी यानी पूज्य बापू का नाम दिया, लेकिन 2 दिन में ही सरकार को यह नाम भी नहीं जंचा. उसे लगा कि महात्मा गांधी या बापू की तस्वीर नोटों पर ही अच्छी दिखती है. किसान-मजदूर की जिंदगी हमेशा राम भरोसे रहती है. कभी वह आत्महत्या करता है तो कभी किडनी बेचता है. उसे समझाया जाना चाहिए कि जैसी हालत में हो उसी में संतुष्ट रहो. जीना यहां, मरना यहां, इसके सिवा जाना कहां ! जाही विधि राखे राम ताही विधि रहिए ! इसलिए राम नाम का स्मरण कर सरकार ने योजना का नया नाम वीबी-जी राम जी रख दिया. इसका फुल फॉर्म है- विकसित भारत रोजगार एवं आजीविका मिशन ग्रामीण. इतना

लंबा नाम कौन याद रखेगा इसलिए किसान-मजदूर इसे जी राम जी कह सकते हैं. हिंदी भाषी प्रदेशों में लोग सुबह उठकर या किसी से मुलाकात होने पर जयरामजी बोलते हैं. अब वह इस योजना का नाम लेते हुए जी-राम-जी बोलेंगे.'

हमने कहा, 'बापू नाम में कौन सी दिक्कत थी? मोहम्मद रफी ने गाया था- सुनो सुनो ऐ दुनियावालो बापू की ये अमर कहानी, वो बापू जो पूज्य था इतना जितना गंगा मां का पानी. कवि पं. प्रदीप ने भी गाया था- देखो कभी बरबाद न होवे ये बगीचा जिसको हृदय के खून से बापू ने है सींचा !' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, सरकार को लगा होगा कि इस समय जेल में भी एक तथाकथित संत आजीवन कारावास की सजा भोग रहे हैं जिन्हें उनके अनुयायी 'बापू' कहते हैं इसलिए कुछ अलग नाम रखना चाहिए. महात्मा गांधी ने भी प्राण त्यागते समय हे राम कहा था इसलिए योजना में राम का नाम डाल देना चाहिए. किसान को 6,000 रुपये हर साल देकर सरकार राम-राम कर लेती है. लाडली बहन हो सकती है लेकिन लाडला किसान नहीं हो सकता. कर्ज के बोझ, फसलों की बर्बादी, उचित दाम नहीं मिलने से जब किसान का दिल टूट जाता है तो उसका राम नाम सत्य हो जाता है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12115 - डॉ. सागर खादीवाला

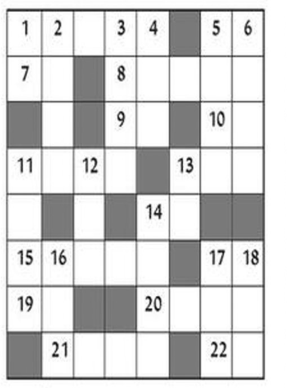

बाएं से दाएं

1. तुलसी के पौधे का पत्ता 5. स्वामी, प्रभु, मालिक (उर्दू) 7. सौ हजार 8. वह मनुष्य जो बहुत सी बातें एक बार सुनने पर याद रख सकता है (सं.) 9. एक बड़ा वृक्ष जिसका फल दवा के काम आता है 10. शत्रु, बैरी (सं.) 11. वह वेदी या छोटा चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर स्मारक स्वरूप बनाया जाए 13. आर्त, दुखित, व्याकुल 14. जादू, इंद्रजाल, संपत्ति, दया, लक्ष्मी 15. उपकरण, सामग्री (उर्दू) 17. बगुला, कुबेर, सफेद 19. वस्त्र, चीरने का काम या भाव 20. सोने की जगह पर सिर की ओर का भाग 21. दर्शनशास्त्र का ज्ञाता 22. लीन, लिप्त

ऊपर से नीचे

1. तराजू, तौल, बारह राशियों में से सातवीं राशि 2. जिसके पास लाखों रुपयों की संपत्ति हो 3. विजयादशमी 4. झिड़की 5. अवलंबित, आश्रित 6. उत्तरप्रदेश का एक बड़ा शहर जो चमड़े के व्यवसाय के लिए प्रसिद्ध है 11. दाएं तथा बाएं हाथ से सुगमतापूर्वक तीर चला सकने के कारण अर्जुन का नाम पड़ा 12. वर्षा के चार महीने, चातुर्मास, वर्षा ऋतु संबंधी गीत या कविता 13. देह, शरीर 14. मन की कल्पना से उत्पन्न, मन संबंधी 16. पान में खाने की तंबाकू, एक भोज्य पदार्थ जो चावलों से बनता है 17. वसंत ऋतु, सौंदर्य, विकास (उर्दू) 18. मोटे कपड़े की दीवार जिससे कोई स्थान घेरा जाता है (उर्दू)

Solution 12114

ओ	सा	मा	बि	न	ला	दे	न
ज	■	हि	रा	स	त	■	त
स्वी	का	र	ना	■	■	का	म
■	रो	■	■	अ	स्त	व्य	स्त
इ	बा	द	त	■	ब्ध	■	क
त	र	ह	■	स	ता	ना	■
वा	■	श	री	फ	■	ट	प
र	ज	त	■	ल	ह	क	ना

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में व्यवसाय में सुधार होगा. पुरानी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा. वर्ष के मध्य में मित्रों व भाईयों के सहयोग से कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी. दाम्पत्य जीवन सुखमय बना रहेगा. लाभ होगा, पर नहीं के बराबर. वर्ष के अन्त में विवादित राजनीति का सामना करना पडेगा. मित्र से तनाव रहेगा. व्यापार में परिश्रम एवं व्यस्तता रहेगी.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को व्यवसाय में सुधार होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को मित्र व भाईयों के सहयोग से कार्य क्षेत्र में वृद्धि होगी. कर्क राशि के व्यक्तियों को व्यापार में परिश्रम की अधिकता रहेगी. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को पुरानी समस्याओं से छुटकारा मिलेगा. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का स्वास्थ्य परिवर्तन होगा. विवादित राजनीति का सामना करना होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को दाम्पत्य जीवन में आनन्दमय वातावरण रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक संकोची, ईमानदार, व्यवहार कुशल, धैर्यवान होगा, शिक्षा अच्छी रहेगी, ये परोपकारी, एवं प्रेरक होगा, भाई के साथ कार्यो में सदैव तत्पर रहेगा, माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

मेष- काम को वक्त पर पूरा करने का प्रयत्न करें, लंबी दूरी की यात्रा हो सकती है, स्वास्थ्य की अनुकूलता रहेगी, प्रियजनों से भेंटवार्ता होगी.

वृषभ- लाभ के अच्छे अवसर हाथ में आसकते हैं, दौड़धूप अधिक करना पडेगी, अनावश्यक कार्यो में संयम रखें, शत्रु की गतिविधियों पर ध्यान दें.

मिथुन- जरूरतमंदों की मदद करके खुश होंगे, आय के नए श्रोत बनने से धन कोष में वृद्धि होगी, नए मैत्री संपर्क स्थापित होंगे, आर्थिक संसाधनों का उदय होगा.

कर्क- लाभ के अवसर मिलेंगे, सूझबूझ कर आगे बढ़े, उलझनें दूर होंगी, राजकीय कार्यो में सफलता मिलेगी, नौकरी में कार्याधिक्त रहेगा.

सिंह- सोच समझकर पूॅंजी निवेश करें, धार्मिक कार्यो में भागीदारी से मन में संतोष रहेगा, व्ययभार अधिक होगा, अतिथि आगमन का योग है.

कन्या- अनुभवी लोगों की मदद से विवाद सुलझ जायेंगे, तनाव दूर होगा, कार्य की अधिकता से मानसिक चिन्ता रहेगी, आलस्य बना रहेगा.

तुला- नए काम की शुरूआत में बाधा आ सकती है, गलत व्यक्तियों का साथ नुकसान देगा, इच्छित कार्य में सफलता मिलेगी, स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा.

वृश्चिक- बातचीत में नरमी बरतें, अनुभव की कमी से काम अटक सकते हैं, रचनात्मक कार्यो में प्रगति होगी, संतान संबंधी शुभ समाचार मिलेगा.

धनु- पारिवारिक आयोजन में भागीदारी बढेगी, माता पिता के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, रचनात्मक कार्यों में प्रगति होगी, संतान संबंधी शुभ समाचार मिलेगा.

मकर- समस्याओं को निपटाने में सफल होंगे, भावनाओं में बहकर गलत सौदा कर सकते हैं, भौतिक सुख साधनों की प्राप्ति होगी, अनावश्यक विवादों को टालें.

कुम्भ- सोच समझकर पूॅंजी निवेश करें, धार्मिक कार्यों में भागीदारी बढेगी, मातृपक्ष की चिन्ता रहेगी, सामाजिक कार्यों में संलग्नता रहेगी.

मीन- अटके कार्य सुलझा लेंगे, नए अवसर मिलने से उत्साह बढ़ेगा, नवीन वस्त्राभूषण उपहार की प्राप्ति होगी, निजी कार्यों में रूचि रहेगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

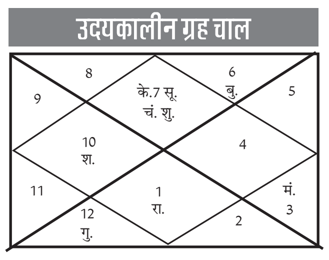

पंचांग

रा.मि. 28 संवत् 2082 पौष कृष्ण अमावस्या भृगुवासरे रातअंत 6/37, ज्येष्ठा नक्षत्रे रात 10/55, शूल योगे शाम 4/35, चतुष्पद करणे सू.उ. 6/47, सू.अ. 5/13, चन्द्रचार वृश्चिक रात 10/55 से धनु, पर्व- स्नानदान श्राद्ध अमावस्या, शु.रा. 8, 10, 11, 2, 3, 6 अ.रा. 9, 12, 1, 4, 5, 7 शुभांक- 0, 3, 7.

व्यापार भविष्य

पौष कृष्ण अमावस्या को ज्येष्ठा नक्षत्र के प्रभाव से सींगदाना, काली, उड़द, तिल, तेल, सरसों, लोहा, शेयर के भाव में तेजी होगी, गुड, खांड, धनु, निकिल, कॉपर, के भाव में घटा-बढी, होगी. भाग्यांक 2188 है.

SUDOKU 7247

				5	1	4		
			7				2	
		8						3
	1							8
5				4				9
7							6	
4						7		
	2				6			
		3	9	8				

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7246

4	7	6	3	5	2	9	1	8
5	9	8	6	7	1	4	3	2
2	3	1	8	9	4	7	6	5
6	8	5	7	3	9	2	4	1
3	2	4	5	1	6	8	7	9
7	1	9	4	2	8	3	5	6
8	4	3	2	6	5	1	9	7
1	5	2	9	4	7	6	8	3
9	6	7	1	8	3	5	2	4